कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) [| | | | | |]

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय सामाजिक विज्ञान

परीक्षा का दिन................ ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ...... संकेतांक [| | | |]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 159/2016

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अति
पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध क त उत्तर पुस्तिका
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें। जायेगी।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लि
रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें। कर अन्त के सभी
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्य
(i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के की जा सकेगी।
नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं ा अपना नामांक,
साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जायेगी। अन्यथा "अनुचित
(ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़े नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के
चाहिये। ार पृष्ठ पूरे होने
(iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी
उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है। का इलेक्ट्रोनिक
(iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अ
चाहिये, इसकी जांच कर लें। सामग्री नहीं होनी
(v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय
समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें। य है, अतः परीक्षा
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा द
1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विरूप परीक्षक को
उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें। के लिए रफ कार्य
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित।
त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये। किसी भी प्रकार की

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	यह कथन 'महात्मा गाँधी' का है।
2	लोकतांत्रिक शासन प्रणाली
3	प्रति व्यक्ति आय :- किसी देश की कुल आय में कुल जनसंख्या का भाग देकर प्रतिव्यक्ति आय निकाली जाती है अर्थात देश में प्रत्येक व्यक्ति की औसतन आय कितनी है। प्रति व्यक्ति आय = कुल राष्ट्रीय आय / कुल जनसंख्या
4	आरा, चीनी
5	निवेश :- किसी उद्योग या व्यवसाय में लगाई गई पूँजी, निवेश कहलाती है।
6	उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम 1986 का दूसरा नाम 'कोपरा (COPRA)' है।
7	पूना पैक्ट 1932 में 'महात्मा गाँधी एवं डा॰ भीमराव अम्बेडकर' के मध्य हुआ था।
8	सतत पोषणीय विकास :- विनाश रहित विकास अर्थात ऐसा विकास जिसमें भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में

परीक्षार्थी उत्तर

वर्तमान विकास की दर को बनाए रखा जाता है, सतत् पोषणीय विकास कहलाता है।

9. काली मृदा की विशेषताएँ :-

(i) इसका रंग काला एवं प्रजाकरण उच्च होता है।
(ii) इसकी नमी धारण करने क्षमता उच्च होती है।
(iii) वर्षाकाल में मिट्टी चिपचिपी हो जाती है।

10. संकटापन्न वन्य प्रजातियाँ :-

(i) मगरमच्छ
(ii) भारतीय जंगली गधा
(iii) एक सींग वाला गैंडा

11. राजस्थान के अर्द्धशुष्क एवं क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण निम्न प्रकार से किया जाता है-

(i) खादीन विधि द्वारा
(ii) गड्ढे बनाकर
(iii) टाँका अथवा भूमिगत टैंक बनाकर
(iv) नाड़ियाँ के द्वारा

इन विधियों द्वारा राजस्थान में वर्षा की प्रत्येक बूंद का संग्रहण किया जाता है। तथा ग्रीष्मकाल में जल का उपयोग किया जाता है।

12. चावल की कृषि की भौगोलिक दशाएँ :-

(i) मिट्टी:-

चावल की कृषि के लिए जलोढ़ मिट्टी और डेल्टाई मृदा उपयुक्त है।

नामांक Roll No.

S-08-Social Sci

माध्यमिक परीक्षा, 2016

SECONDARY EXAMINATION, 2016

SOCIAL SCIENCE

उत्तर - 30

(क)

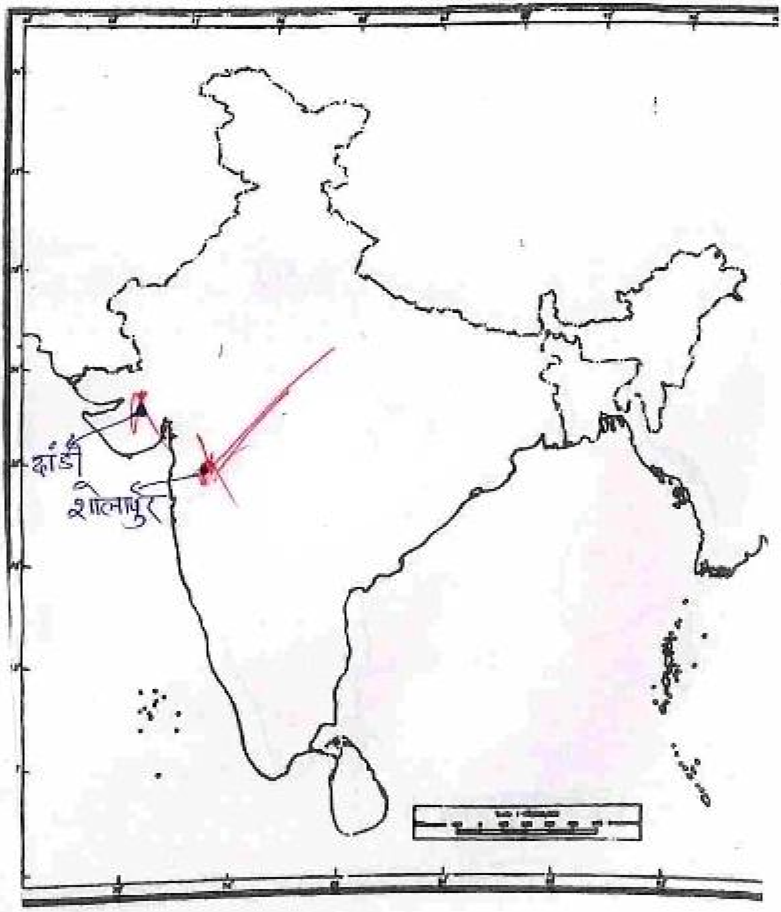

/-1004

नामांक Roll No.

S–08–Social Science

माध्यमिक परीक्षा, 2016

SECONDARY EXAMINATION, 2016

SOCIAL SCIENCE

30.(ख)

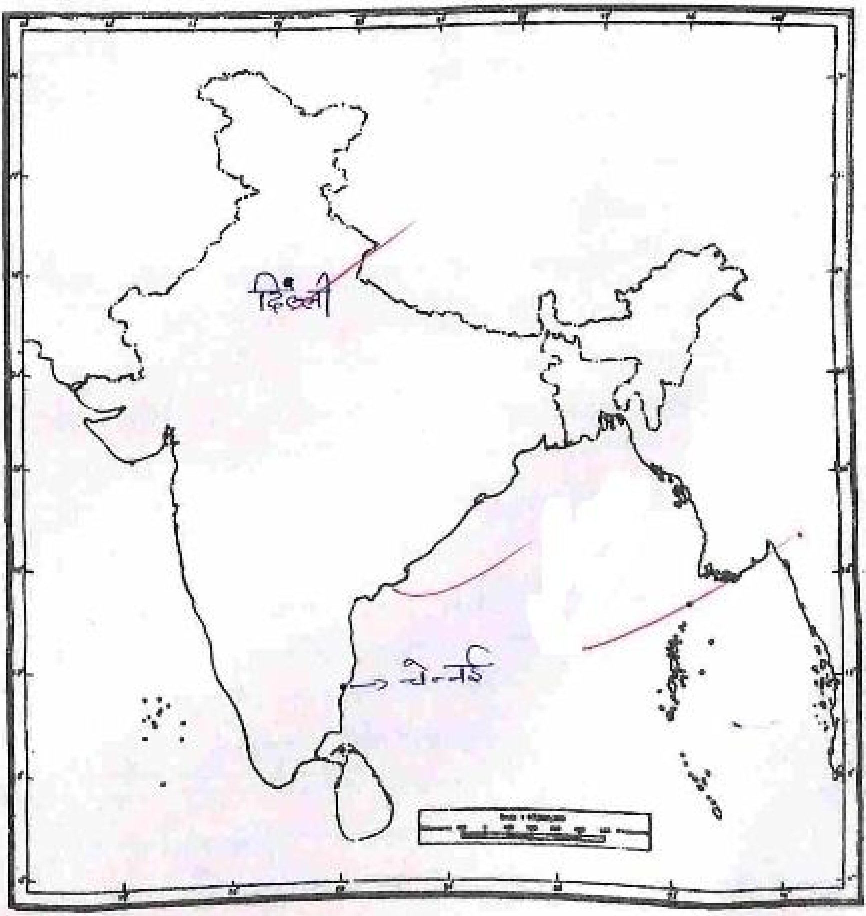

V-1004

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) तापमान:-
चावल की कृषि के लिए 20°C से 25°C तापमान उपयुक्त है।

(iii) वर्षा:-
चावल की कृषि के जल की अधिक आवश्यकता होती है। चावल की कृषि के लिए 150cm-200cm वर्षा उपयुक्त है। जिन स्थानों में वर्षा नहीं होती वहाँ सिंचाई द्वारा चावल की कृषि की जाती है।

13. विनिर्माण उद्योग का महत्व:-

(i) देश की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए विनिर्माण उद्योगों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(ii) विनिर्माण उद्योगों को कृषि का पूरक माना जाता है। ये कृषि के लिए औजार, उपकरण एवं रसायन, कीटनाशक उपलब्ध कराते हैं।

(iii) ये द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रक में भी रोजगार का सृजन करते हैं।

(iv) विनिर्माण उद्योगों को किसी देश के आर्थिक विकास की रीढ़ माना जाता है।

14. सड़क परिवहन की उपयोगिता:-
(i) कम दूरी, कम यात्रियों के लिए मितव्ययी परिवहन का साधन।
(ii) द्वार को द्वार से जोड़ता है।
(iii) अन्य परिवहन के साधनों यथा- रेल परिवहन एवं वायु परिवहन तथा जल परिवहन को जोड़ता है।
(iv) अपेक्षाकृत उबड़-खाबड़ एवं विच्छिन्न प्रदेशों में भी बनाया जा सकता है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(४) इनकी निर्माण लागत अपेक्षाकृत सस्ती है।

15. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन:-

दोनो विश्वयुद्धों के बाद युद्धोत्तर विश्व अर्थव्यवस्था के पुनर्निमाण तथा औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार हेतु जुलाई 194 में अमेरिका के न्यूहैमपशायर शहर में ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र विकास सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसे ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के नाम से जाना जाता है।

ब्रेटन वुड्स की जुड़वा संतानें:-

(i) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) तथा (ii) विश्व बैंक को ब्रेटन वुड्स की जुड़वा संतानें कहा जाता है। क्योंकि इन दोनों का निर्माण ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में हुआ था।

17. आधुनिक शहर के रूप में बम्बई:-

(i) बम्बई पर ब्रिटिश आधिपत्य:-

सोलहवीं शताब्दी में ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी से हुआ तो पुर्तगालियों ने बम्बई को ब्रिटेन को उपहार स्वरुप सौंप दिया।

(ii) अंग्रेजों का मुख्य बंदरगाह:-

अंग्रेज - मराठा युद्ध में अंग्रेजों की विजय के बाद अंग्रेजों ने मुम्बई को पश्चिमी भारत के मुख्य बंदरगाह के रूप में विकसित किया।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iii) प्रेसीडेंसी की राजधानी :-
अंग्रेजों ने बम्बई को प्रेसीडेंसी की राजधानी घोषित कर दिया। इसके बाद बम्बई के विकास की प्रक्रिया तीव्र हो गई। अब बम्बई व्यापारियों, दुकानदारों तथा श्रमिकों के आकर्षण का केन्द्र बन गया।

(iv) उद्योगों की स्थापना :-
बम्बई में उद्योगों की स्थापना की गई। कपड़ा मिल खुलने के बाद लोग रोजगार के लिए वहाँ आने लगे।

(v) भूमि विकास परियोजनाएँ :-
भूमि विकास परियोजना के माध्यम से बम्बई के सातों द्वीपों को मिलाया गया।
इस प्रकार बम्बई का आधुनिक शहर के रूप में विकास हुआ।

18. ब्रिटेन में राष्ट्रवाद :-
ब्रिटेन में राष्ट्रवाद की प्रक्रिया का इतिहास शेष यूरोप से भिन्न था। यहाँ राष्ट्रवाद की प्रक्रिया किसी उथल-पुथल अथवा क्रांति का परिणाम न होकर लम्बे समय की प्रक्रिया थी।

(i) ब्रिटेन में अनेक नृजातीय समूह के लोग रहते थे। यहाँ अंग्रेज, वेल्स, स्कॉटिश आदि नृजातीय समूह के लोग रहते थे।

(ii) इनमें अंग्रेज आर्थिक रूप से शक्तिशाली व धनी थे।

(iii) अंग्रेजों ने धीरे-धीरे ब्रिटेन की अन्य जातियों पर अपना आधिपत्य जमाना शुरु कर दिया था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) उन्होंने आयरलैंड को इंग्लैंड में मिला लिया।
(v) स्काटलैंड या स्विट्जरलैंड को उन्होंने जबरदस्ती दमन करके ब्रिटेन में मिला लिया।
(vi) इस प्रकार संयुक्त ब्रिटेन महासंघ का निर्माण किया।

इस प्रकार ब्रिटेन में राष्ट्रवाद की प्रक्रिया लम्बे समय तक चलने वाली प्रक्रिया थी, यह किसी क्रांति और उथल-पुथल का प्रमाण नहीं थी।

6

15. सत्ता की साझेदारी के विभिन्न रूप:-

(i) सरकार के विभिन्न अंगो के मध्य सत्ता की साझेदारी (क्षैतिजीय वितरण):-

सरकार के एक ही स्तर पर विभिन्न अंगो (जैसे- विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका) के मध्य सत्ता के बँटवारे को सत्ता का 'क्षैतिजीय वितरण' कहते हैं।

इसमें सत्ता के विभिन्न अंग एक दूसरे पर नियंत्रण बनाए रखते हैं अतः इसे 'नियंत्रण एवं संतुलन' की व्यवस्था भी कहते हैं।

जैसे- भारत सरकार तीन अंगो विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के मध्य एक ही स्तर पर सत्ता को बाँट दिया गया है।

(ii) विभिन्न स्तरों पर सत्ता की साझेदारी (उर्ध्वाधर वितरण):-

इसमें सरकार के विभिन्न स्तरों पर शक्तियों का

बँटवारा कर दिया जाता है इसे सत्ता का ऊर्ध्वाधर वितरण कहते हैं। इसमें उच्चतर व निम्नतर स्तर की सरकार होती है।

जैसे – भारत में

केन्द्र सरकार
↓
राज्य सरकार
↓
स्थानीय सरकार

(iii) विभिन्न सामाजिक समूहों के मध्य सत्ता की साझेदारी:- सत्ता की साझेदारी का अन्य रूप है विभिन्न सामाजिक समूहों (भाषायी, धार्मिक, क्षेत्रीय, लैंगिक समूह) के मध्य सत्ता का बँटवारा। इसमें विभिन्न पिछड़े वर्गों तथा महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की जाती है।

20. भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ:-

(i) लोकतंत्र के विस्तार की चुनौती:- भारत में लोकतंत्र की स्थापना हो चुकी है अतः अब भारतीय लोकतंत्र के समक्ष इसके विस्तार की चुनौती है। इसके अंतर्गत निम्न चुनौतियाँ हैं-

(a) महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था करना

(b) पिछड़े वर्गों की सत्ता में भागेदारी में वृद्धि करना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	
	(ii)	लोकतंत्र को मजबूत करने की चुनौती:-
		भारत जैसे लोकतंत्र में इसकी मजबूती की चुनौती प्रमुख है। इसके अंतर्गत लोकतांत्रिक संस्थाओं के व्यवहारों को और अधिक लोकतांत्रिक बनाने की चुनौती है।
	(iii)	गरीबी और निरक्षरता:-
		भारतीय लोकतंत्र में अब भी गरीबी है और अधिकांश व्यक्ति निरक्षर हैं जो भारतीय लोकतंत्र के विस्तार व मजबूती में बाधक हैं। अतः भारतीय लोकतंत्र में प्रश्न गरीबी और निरक्षरता को दूर करने की चुनौती है।
	(iv)	अन्य चुनौतियाँ:-
		अन्य चुनौतियों के अंदर (1) आर्थिक समानता को बढ़ाना, (2) दलों को राजनैतिक (लोकतांत्रिक) बनाना, (3) चुनावी व्यवस्था में सुधार करना आदि चुनौतियाँ हैं।
	21.	आर्थिक विकास के लक्ष्य:-
		आर्थिक विकास के लक्ष्य निम्नलिखित हैं-
	(i)	आय में वृद्धि:-
		आर्थिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य आय में वृद्धि करना है इसके अंतर्गत प्रतिव्यक्ति आय के साथ राष्ट्रीय आय में वृद्धि भी सम्मिलित है।
	(ii)	बेहतर रोजगार, नियमित मजदूरी:-
		आर्थिक विकास का एक अन्य लक्ष्य है लोगों को बेहतर और नियमित रोजगार

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

तथा नियमित मजदूरी उपलब्ध करवाई जाए।

(iii) शिक्षा की सुविधाएँ :- आर्थिक विकास का एक और प्रमुख लक्ष्य है शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार करना क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति अधिक कार्यकुशल एवं योग्य होता है।

(iv) अन्य लक्ष्य :-
(1) सामाजिक सुविधाओं का विस्तार करना
(2) चिकित्सा सेवाओं का विस्तार करना

22. प्राथमिक, द्वितीयक तृतीयक क्षेत्रक की परस्पर निर्भरता :-

अर्थव्यवस्था में प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रक परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। इन तीनों का विकास एक दूसरे पर निर्भर करता है यथा -

(i) प्राथमिक क्षेत्रक द्वितीयक क्षेत्रक को मध्यवर्ती उत्पाद अर्थात् कच्चा माल प्रदान करता है।

(ii) प्राथमिक क्षेत्रक से कच्चे माल को द्वितीयक क्षेत्रक अर्थात् उद्योगों तक ले जाने के लिए परिवहन की आवश्यकता होगी जो तृतीयक क्षेत्रक के अंतर्गत आता है।

(iii) द्वितीयक क्षेत्रक में उत्पादित औजार, उपकरण प्राथमिक क्षेत्रक के विकास में सहायक है।

(iv) कृषि का विकास द्वितीयक क्षेत्रक में उत्पादित रसायनों, कीटनाशकों तथा उर्वरकों पर निर्भर करता है।

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(v) तृतीयक क्षेत्रक जिसमें सन्चार, परिवहन, बैंकिंग, भंडारण जैसी बुनियादी सेवाएँ आती हैं उनके बिना प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक का विकास असंभव है। इस प्रकार प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रक एक-दूसरे के पूरक हैं।

23. **भारत में वैश्वीकरण के प्रभाव:-**

वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के भारतीय अर्थव्यवस्था पर निम्न प्रभाव पड़े-

(i) **उपभोक्ताओं को लाभ:-**

वैश्वीकरण से उपभोक्ता को लाभ हुआ है अब उनके सामने पहले से अधिक विकल्प उपलब्ध हैं। अब वे उच्च गुणवत्ता तथा कम कीमत का लाभ उठा रहे हैं।

(ii) **उत्पादकों को लाभ:-**

वैश्वीकरण के कारण उत्पादक अपने उत्पाद को न केवल भारत में बल्कि अन्य देशों में भी बेच सकते हैं जिससे उन्हें लाभ हुआ। कुछ कम्पनियाँ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के रूप में उभर कर आई।

(iii) **नवीन तकनीक का आगमन:-**

वैश्वीकरण के दौरान बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने साथ नवीन तकनीक लेकर आई जिससे भारतीय इन तकनीकों का लाभ उठा रहे हैं।

अंक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) अन्य प्रभाव:-
1. रोजगार में वृद्धि
2. छोटे उत्पादकों का नष्ट होना,
3. कुटीर उद्योगों का बंद होना।

24 बाजार में उपभोक्ता का शोषण :- बाजार में उपभोक्ता का शोषण अनेक प्रकार से होता है-

(i) अधिक मूल्य वसूलना:- कई बार विक्रेता उपभोक्ता से कीमत सूची में निर्धारित मूल्य से भी अधिक मूल्य वसूलते है। जिससे उपभोक्ता का शोषण होता है।

(ii) मिलावट :- उत्पादक खाद्य पदार्थों तथा खाद्य तेलो में मिलावट करके उपभोक्ता को नकली तथा घटिया माल देते हैं। जिससे उपभोक्ता का शोषण होता है।

(iii) कृत्रिम अभाव या जमाखोरी :- व्यापारी कई बार वस्तु का कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर उस वस्तु का अधिक मूल्य वसूलते है। जिससे उपभोक्ता का शोषण होता है।

(iv) अन्य तरीके:-
(1) कालाबाजारी
(2) गलत तथा सीमित सूचना

प्राप्तांक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

25. मुद्रण संस्कृति ने भारत के राष्ट्रवाद के विकास में निम्नलिखित प्रकार से मदद की -

(i) समाज सुधारकों के विचारों का प्रसार:-

मुद्रण संस्कृति के कारण भारतीय समाज सुधारकों तथा राष्ट्रवादी उदारवादियों के विचारों का प्रसार हुआ अब सामान्य लोग भी उनके विचारों से प्रभावित हुए।

(ii) प्राचीन साहित्य का मुद्रण:-

मुद्रण संस्कृति के आगमन के बाद प्राचीन साहित्य का मुद्रण होने लगा जिससे भारतीयों को उनके गौरव का ज्ञान हुआ और उनमें राष्ट्रवाद की भावना का उदय हुआ।

(iii) प्रिंटिंग प्रेस ऑफ इंडिया की भूमिका:-

भारतीय मुद्रण प्रेस की स्थापना के बाद राष्ट्रवादी विचारों की छपाई होने लगी। अब राष्ट्रवाद की भावना जन-जन तक पहुंचने लगी। भारतीय प्रिंटिंग प्रेस पर प्रतिबंध लगाने के अनेक प्रयास किए गए तथा 'वर्नाक्युलर देसी प्रेस' एक्ट के तहत स्थानीय समाचार पत्रों पर सेंसर लगा दिया गया जिससे राष्ट्रवादी आंदोलन में कमी आने की बजाय उसमें विद्रोह भड़क उठा।

मुद्रण संस्कृति के आगमन के माध्यम से पुस्तकों, समाचार पत्रिकाओं, पत्रिकाओं तथा चित्रों के माध्यम से राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रचार प्रसार किया गया।

मुद्रण संस्कृति के आगमन के बाद पुस्तकें सस्ती हो गई जिससे गरीब जनता भी पुस्तकें पढ़ने लगी और उन तक राष्ट्रवाद की भावना पहुंची।

परीक्षार्थी उत्तर

26. परम्परागत ऊर्जा स्रोत :-
(i) कोयला (ii) पेट्रोलियम (iii) प्राकृतिक गैस
(iv) जल विद्युत (v) ताप विद्युत (vi) उपले (vii) लकड़ी

कोयला :-
इसका निर्माण पेड़-पौधो के लम्बे समय तक भू-गर्भ में दबने के कारण उच्च दाब तथा ताप के कारण इसका निर्माण होता है।

⇒ उपयोग :-
यह भारत का सबसे प्राचीनतम परम्परागत ऊर्जा स्रोतो में से एक है। इसका उपयोग विद्युत उत्पादन तथा घरों में ऊर्जा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इससे विद्युत संयंत्रो में जलाकर पानी गर्म करके ऊर्जा प्राप्त की जाती है।

⇒ विस्तार :-
भारत में कोयला दो शैल क्रमों में पाया जाता है-

(1) टरशियरी कोयला :-
इसका निर्माण 55 लाख वर्ष (अनुमानित) पहले हुआ था। असम तथा उ.पू. भारत में इसका विस्तार है।

(2) गोंडवाना क्षेत्र :-
यह कोयला लगभग 200 लाख वर्ष पुराना है। इस कोयले की गुणवत्ता उच्च है। इसका विस्तार छोटा नागपुर का पठार (प. बंगाल, झारखंड, आदि राज्य) में है।

⇒ प्रकार :-
कोयला चार प्रकार का होता है-
(i) एन्थ्रेसाइट (सर्वोत्तम गुण वाला कोयला)
(ii) बिटुमिनस (सर्वाधिक औद्योगिक उपयोग वाला कोयला)
(iii) लिग्नाइट (iv) पीट

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी द्वारा

27. भारत : एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र:-

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है इसके निम्नलिखित कारण हैं:-

(i) कोई भी धर्म राजधर्म नहीं:-

भारत में किसी भी धर्म को राजधर्म की मान्यता नहीं दी गई है। भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक धर्म समान है। श्रीलंका, पाकिस्तान और इंग्लैंड की विपरित संविधान किसी विशेष धर्म का संरक्षण नहीं करता।

(ii) कोई भी धर्म अपनाने की स्वतंत्रता:-

भारतीय संविधान में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा अनुसार कोई भी धर्म अपनाने की स्वतंत्रता नहीं है। कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म का प्रचार कर सकता है।

(iii) धार्मिक भेदभाव का निषेध:-

भारत में सरकार धर्म, नस्ल जाति, रंग अथवा लिंग के आधार पर नौकरी आदि में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं कर सकती।

(iv) सरकार को हस्तक्षेप की इजाजत:-

सरकार को धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने की संवैधानिक इजाजत प्राप्त है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है।

परीक्षार्थी उत्तर

28. राजनैतिक दलों में सुधार हेतु किए गए प्रयासः- भारत में राजनैतिक दलों में सुधार हेतु अनेक प्रयास किए गए हैं-

(i) दल-बदल विरोधी कानून:- सर्वोच्च न्यायालय ने बढ़ती दल-बदलने की घटनाओं को देखते हुए दल-बदल विरोधी कानून पारित किया। इस कानून के अनुसार दल-बदलने पर नेता को अपनी सीट भी गँवानी पड़ेगी।

सामान्यतः नेतागण अपने निजी स्वार्थ-पैसे लेकर दल-बदल लेते थे इन पर रोक लगाने के लिए दल-बदल विरोधी कानून सफल रहा है।

(ii) आयकर रिर्टन भरना अनिवार्य:- चुनाव आयोग ने प्रत्येक दल तथा उम्मीदवार के लिए आयकर रिर्टन भरना अनिवार्य कर दिया जिससे दलों में धन की बढ़ती घुसपैठ पर नियंत्रण लगा है।

(iii) आपराधिक मामलों के लिए शपथ-पत्रः- चुनाव आयोग ने उम्मीदवार के लिए उसके खिलाफ चल रहे सभी आपराधिक मामलों की जानकारी देना अनिवार्य कर दिया गया है।

(iv) आंतरिक लोकतंत्र की स्थापनाः- राजनैतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र की स्थापना के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। अब प्रत्येक राजनैतिक दल के लिए अपने सदस्यों की सूची रखना तथा प्रत्येक नियत अवधि के बाद चुनाव कराने के प्रयास किए जा रहे हैं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	29.	हमारे विचार से औपचारिक तथा अनौपचारिक साख में औपचारिक साख श्रेष्ठ है। इसकी विशेषताओं के कारण यह श्रेष्ठ है। इसकी विशेषताएँ अग्रलिखित है:-

(i) सरकार द्वारा पंजीकृत:-

औपचारिक साख का स्रोत सरकार द्वारा पंजीकृत होता है जबकि अनौपचारिक साख का स्रोत सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं होता है।

(ii) नियमों एवं विनियमों का पालन:-

औपचारिक साख के स्रोत में सरकार द्वारा बनाए गए नियमों तथा विनियमों का पालन होता है।

(iii) निम्न ब्याज दर:-

औपचारिक साख के स्रोत की ब्याज दरे अपेक्षाकृत कम होती है अतः यह अन्य साख के स्रोतों से श्रेष्ठ है।

(iv) RBI का नियंत्रण:-

औपचारिक साख के स्रोतो की क्रियाओं पर RBI का नियंत्रण होता है। अतः यह श्रेष्ठ है।

(v) ऋणी का शोषण न होना:-

अनौपचारिक साख के स्रोत में ऋणी का शोषण होता है। जबकि औपचारिक साख के स्रोत में ऋणी का किसी भी प्रकार से शोषण नहीं किया जाता है।

इन विशेषताओं के कारण औपचारिक साख स्रोत साख के अनौपचारिक स्रोत से श्रेष्ठ है।

अंक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

31. (क) लोकतांत्रिक शासन प्रणाली अपनी निम्न विशेषताओं के कारण अन्य शासन प्रणालियों से बेहतर है—

(i) लोकतांत्रिक समानता:— लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में संविधान तथा कानूनों के लिए प्रत्येक व्यक्ति समान होता है। लोकतांत्रिक शासन लोगों के साथ समानता का व्यवहार करने में अन्य शासन प्रणालियों से श्रेष्ठ है।

(ii) बेहतर फैसले:— लोकतांत्रिक शासन प्रणाली बेहतर तथा प्रभावी फैसले लेने में अन्य शासन प्रणालियों से बेहतर है। हालांकि इसमें फैसले देरी से लिए जाते हैं क्योंकि कानूनों तथा फैसलों को विधायिका का सामना करना पड़ता है।

(iii) जनता का शासन:— लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रतिनिधियों अर्थात् शासक का चुनाव जनता द्वारा होता है अतः देश की व्यवस्था जनता द्वारा चलाई जाती है।

(iv) नागरिक गरिमा तथा सुरक्षा:— लोकतांत्रिक शासन प्रणाली नागरिक गरिमा को बनाए रखने तथा उसकी सुरक्षा में अन्य शासन प्रणालियों से बेहतर है।

(v) अन्य विशेषताएं:—
(1) उत्तरदायी, जिम्मेदार एवं वैध सरकार
स्वतंत्रता की सुरक्षा
(2) कानूनों का राज
(3)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ख) (i) सार्वजनिक यातायात का महत्व:-

(1) सार्वजनिक यातायात के कारण सड़कों पर भीड़ में कमी आती है।
(2) इससे प्रदूषण भी कम होता है।
(3) यात्रा व्यय में भी कमी आती है।

(ii) रैम्प का उपयोग:-

रैम्प विशेषयोग्यजन अर्थात् वृद्ध, व्यक्ति विकलांगों के लिए बनवाए जाते हैं। ये उनकी सुविधा के लिए बनाए जाते हैं।

फुट ओवर ब्रिज के दूर होने अथवा भगदड़ मचने की स्थिति में रैम्प का उपयोग किया जाता है।

(iii) सड़क दुर्घटना से व्यक्ति के जीने के अधिकार का उल्लंघन होता है।

-- समाप्त --